online class.

(1)

Lecture No:-(32.)

Date 04/5/2020,
Time. 10:00 to 10:50 A.M

Topic.

(1) The four Noble.

Dr. Sunita Kumari
Depart. of philosophy
B.A part - I
paper - (S.)
A.N.D. College shahpur patory,
Samastipur,

Ans:- चतुर्थ आर्य सत्य में बुद्ध ने बताया है कि दुःख निरोध यानि निर्वाण की प्राप्ति दुःखों के कारणों को ही नष्ट करने से ही सकता है।

महात्मा बुद्ध ने देखा कि कुछ ऐसे लोग हैं जो कठोर व्रत द्वारा दुःख के कारणों को समाप्त करना चाहते हैं और कुछ अत्यंत विलासमय जीवन को ही दुःखों का परिणाम मानते हैं। बुद्ध को दोनों ही मार्ग अच्छे नहीं लगे क्योंकि दोनों अतिशय (Extreme) की भाँति अपनी ओर ले जाने वाले थे। अतः उन्होंने माध्यम मार्ग का अनुसरण किया। निम निर्वाण की प्राप्ति के लिए बुद्ध ने जिस माध्यम मार्ग

P.T.O.

Scanned with CamScanner

अपनाया उसके आठ अंग हैं, अतः वह अष्टांगिक मार्ग कहलाता है। यही बौद्ध दर्शन का सार है। बुद्ध ने अपने-अपने शब्दों में बतलाये हैं :- यह गृहस्थ और सन्यासी सभी के लिए है। कोई भी व्यक्ति इन मार्गों पर चलकर निर्वाण प्राप्त कर सकता है। बुद्ध का यह अष्टांगिक मार्ग मध्यम मार्ग की ओर संकेत करता है। महात्मा बुद्ध द्वारा निर्वाण प्राप्ति के लिए बतलाये गए अष्टांगिक मार्ग के निम्नलिखित अंग हैं :-

(i) सम्यक दृष्टि :- अविद्या के कारण आत्मा तथा संसार के संबंध में (लिखा) मिथ्या दृष्टि की उत्पत्ति होती है। अविद्या ही हमारे दुःखों का मूल कारण है। अविद्या से ही मिथ्या दृष्टि उत्पन्न होती है और हम अनित्य, दुःखद और अनात्म वस्तु को नित्य, सुखकर और आत्मरूप समझ बैठते हैं। इस दृष्टि को छोड़कर वस्तुओं को यथार्थ स्वरूप पर सतत ध्यान

PTO

रखना आवश्यक है। यानी ध्यान रखना चाहिए। वस्तुओं के यथार्थ स्वरूप को ही जानना ही सम्यक दृष्टि कहा जाता है। सम्यक दृष्टि का अर्थ बुद्ध के चार सत्यों का यथार्थ ज्ञान है।

(2.) सम्यक संकल्प :- आर्य सत्य के ज्ञानमात्र से ही कोई लाभ नहीं हो सकता जबकि उनके अनुसार जबतक कि जीवन बिताने का संकल्प भी दृढ़ निश्चय नहीं किया जाय। जो भिक्षु निर्वाण चाहते हैं उन्हें सांसारिक विषयों की आसक्ति दूसरों के प्रति द्वेष और हिंसा इन लोगों का परित्याग करने का संकल्प करना चाहिए। यही सम्यक संकल्प कहलाता है।

(3) सम्यक वाक :- बौद्ध दर्शन भी अन्य भारतीय दर्शनों की तरह मुख्यतः आत्मा - शुद्धि का दर्शन है और आत्म - शुद्धि मात्र संकल्प से ही नहीं हो सकती, बल्कि उसे कार्य रूप में भी परिणत होना चाहिए। etc. (4) सम्यक कर्मांत :- सम्यक कर्मांत का अर्थ है -> बुरे कामों का परित्याग। निर्वाण चाहने वालों को चाहिए कि अच्छे - अच्छे काम करें। etc.

END